3 हम भारतवासी

– आर. पी. 'निशंक'

उन्मुखीकरण

अनेक स्थानों से बहने वाली सभी नदियाँ अंत में समुद्र में ही मिलती हैं। उसी प्रकार अलग-अलग धर्म में जन्म लिये मनुष्य भी परमात्मा के पास पहुँचते हैं। कोई भी धर्म छोटा या बड़ा नहीं होता। मानव जाति एक है, मानव धर्म एक है। – *स्वामी विवेकानंद*

प्रश्न

1. नदियाँ किसमें विलीन होती हैं?
2. इसमें किस-किस को एक बताया गया है?
3. 'मानव जाति एक है।' इस पर अपने विचार बताइए।

उद्देश्य

छात्रों में कविता, गीत आदि की रचना शैली का विकास करना और उनमें देशभक्ति के साथ-साथ विश्वबंधुत्व, विश्वशांति, अहिंसा, त्याग, समर्पण आदि सद्गुणों का विकास करना तथा भारत को और भी सशक्त कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अग्रसर करने की प्रेरणा देना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

प्रस्तुत कविता देशभक्ति की भावना पर आधारित है। यह गेय कविता है। इसमें तुकांत शब्द प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया व सामान्य भविष्य में हैं। यह कविता बच्चों में सत्य, अहिंसा, त्याग और समर्पण की भावना जागृत कर, उन्हें विश्वबंधुत्व की ओर क़दम बढ़ाने की प्रेरणा देती है।

कवि परिचय

प्रस्तुत कविता के कवि आर.पी. 'निशंक' हैं। वे आधुनिक हिंदी साहित्यकारों में विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनकी रचनाओं का मुख्य प्रतिपाद्य 'देशभक्ति' है। इन्होंने *समर्पण, नवंकुर, मुझे विधाता बनना है, तुम भी मेरे साथ चलो, जीवन पथ में, मातृभूमि के लिए, कोई मुश्किल नहीं* आदि चर्चित काव्य रचनाएँ लिखी हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : भारत प्राचीन देश है। यहाँ की संस्कृति और सभ्यता सारे विश्व को लुभाती है। सत्यवानों, अहिंसावादियों, संतों-सूफ़ियों, कर्त्तव्यनिष्ठों, धर्मनिष्ठों और देशभक्तों की पावन भूमि भारत देश है। आज यहाँ का बच्चा-बच्चा भी इनके मार्ग पर चलकर विश्वशांति व विश्वबंधुत्व की पवित्र भावनाओं से दुनिया को पावन धाम बनाना चाहता है।

हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे।
मन में श्रद्धा और प्रेम का अद्भुत दृश्य दिखायेंगे।।

ऊँच-नीच का भेद मिटाकर, दिल में प्यार बसायेंगे।
नफ़रत का हम तोड़ कुहासा, अमृत रस सरसायेंगे।।
हम निराशा दूर भगाकर, फिर विश्वास जगायेंगे।
हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे।।

उलझन में उलझे लोगों को, तथ्य दीप समझायेंगे।
भटक रहे जो जीवन पथ से, उनको राह दिखायेंगे।।
हम खुशियों के दीप जला, जीवनज्योत जलायेंगे।
हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे।।

मन में श्रद्धा और प्रेम का अद्भुत दृश्य दिखायेंगे।
सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण की बगिया महकायेंगे।।
जग के सारे क्लेश मिटाकर, धरती को स्वर्ग बनायेंगे।
विश्वबंधुत्व का मूल मंत्र हम, दुनिया में सरसायेंगे।।

हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे।
मन में श्रद्धा और प्रेम का अद्भुत दृश्य दिखायेंगे।।

प्रश्न

1. ऊँच-नीच का भेद मिटाने के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं?
2. हमें अपने जीवन में कैसा पथ अपनाना चाहिए?
3. हम भटकने वालों को राह कैसे दिखा सकते हैं?
4. सत्य, अहिंसा, त्याग और समर्पण की बगिया महकाने के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. यह गीत आपको कैसा लगा? अपनी पसंद और नापसंद का कारण बताइए।
2. दुनिया को 'पावन धाम' बनाने के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं?

(आ) दिया गया पद्यांश पढ़िए और इसके मुख्य शब्द पहचान कर लिखिए।

मन में श्रद्धा और प्रेम का अद्भुत दृश्य दिखायेंगे।
सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण की बगिया महकायेंगे।।
जग के सारे क्लेश मिटाकर, धरती को स्वर्ग बनायेंगे।
विश्वबंधुत्व का मूल मंत्र हम, दुनिया में सरसायेंगे।।

जैसे : श्रद्धा, ...,
.....,
.....,
.....

(इ) निम्नलिखित भाव से संबंधित कविता की पंक्तियाँ पहचान कर लिखिए।

1. संसार में व्याप्त सारे विवादों को मिटाकर, हम धरती को स्वर्ग बनायेंगे।
2. जीवन पथ से भटके लोगों को रास्ता दिखाएँगे।
3. हम भेदभाव दूर करेंगे। हम सब मिलजुलकर रहेंगे।

(ई) नीचे दिया गया पद्यांश पढ़कर सही उत्तर पहचानिए।

आज़ादी अधिकार सभी का जहाँ बोलते सेनानी,
विश्व शांति के गीत सुनाती जहाँ चुनरिया ये धानी,
मेघ साँवले बरसाते हैं, जहाँ अहिंसा का पानी,
अपनी माँगें पोंछ डालती, हँसते-हँसते कल्याणी,
ऐसी भारत माँ के बेटे मान गँवाना क्या जानें,
मेरे देश के लाल हठीले शीश झुकाना क्या जानें।

1. धानी रंग की चुनरी कौन-सा गीत सुना रही है?
   (अ) अधिकार का (आ) आज़ादी का (इ) विश्वशांति का (ई) अहिंसा का
2. भारत के लाल कैसे हैं?
   (अ) सजीले (आ) साँवले (इ) हठीले (ई) निराले
3. सैनिक किसे सभी का अधिकार मानते हैं?
   (अ) आज़ादी को (आ) शांति को (इ) अहिंसा को (ई) मान को
4. 'मान' शब्द का विलोमार्थक है-
   (अ) निरमान (आ) दुरमान (इ) अपमान (ई) स्वमान
5. इस पद्यांश का उचित शीर्षक यह हो सकता है-
   (अ) मेरा देश (आ) देश के लाल (इ) आज़ादी (ई) अहिंसा

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. उलझनों से बचे रहने के लिए हमें कैसी सावधानियाँ लेनी चाहिए?
2. निराशावादी और आशावादी के स्वभाव में क्या अंतर होता है?

(आ) गीत में 'धरती को स्वर्ग' बनाने की बात कही गयी है। हम इसमें क्या सहयोग दे सकते हैं?

(इ) विश्वशांति की राह में समर्पित किस महान व्यक्ति का साक्षात्कार आप लेना चाहेंगे ? साक्षात्कार में उनसे पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक सूची तैयार कीजिए।

(ई) सत्य, अहिंसा, त्याग आदि भावनाओं का हमारे जीवन में क्या महत्व है?

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. दुनिया, अमृत, पावन (वाक्य प्रयोग कीजिए। पर्याय शब्द लिखिए।)
   (जैसे - यह दुनिया बड़ी निराली है। विश्व, जग, संसार)
2. निराशा, त्याग, प्यार (विलोम शब्द लिखिए। उससे वाक्य प्रयोग कीजिए।)
   (जैसे - निराशा x आशा, हमें जीवन में आशा बढ़ानी चाहिए।)
3. खुशी, बगीचा, भावना (वचन बदलिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)
   (जैसे - खुशी - खुशियाँ, बच्चों को खेलों से बहुत सारी खुशियाँ मिलती हैं।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. पवन, पावन, निराशा (संधि विच्छेद कीजिए।)
2. भारतवासी, जीवनज्योत (समास पहचानिए।)

(इ) इन्हें समझिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. खुशी 2. खुशियाँ 3. खुशियों में

(ई) 1.नीचे दिया गया उदाहरण समझिए। उसके अनुसार दिये गये वाक्य बदलिए।

भटक रहे जो जीवन पथ से उनको राह
- दिखाएंगे।
- दिखाते रहेंगे।
- दिखा चुकेंगे।
- दिखाएँ।

1. उलझन में उलझे लोगों को, तथ्य दीप समझायेंगे।

2. **कविता में आये मुहावरे पहचानिए और अर्थ लिख कर वाक्य प्रयोग कीजिए।**

परियोजना कार्य

शांति के पथ पर समर्पित किसी महान व्यक्ति के बारे में जानकारी इकट्ठा कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

उपवाचक

शांति की राह में...

यदि हमारे पास दुनिया का सारा वैभव और सुख साधन उपलब्ध है परंतु शांति नहीं है तो वैसे सुख साधन व्यर्थ हैं। संसार में मानव द्वारा जितने भी कार्य किये जा रहे हैं सबका एक ही उद्देश्य है- 'शांति'।

सबसे पहले तो हमें यह जान लेना चाहिए कि शांति क्या है? शांति का केवल यह अर्थ नहीं कि मुख से चुप रहें। अपितु मन को नियंत्रित कर उसे बुराई के रास्ते पर चलने से रोकना ही वास्तविक 'शांति' है। इसीलिए जहाँ शांति है, वहाँ सुख है, जहाँ सुख है वही स्वर्ग है, जहाँ स्वर्ग है वही दुनिया का श्रेष्ठ स्थान है। युद्ध, दुख, लालच और सभी पीड़ाओं को मिटाने का एक मात्र साधन है- 'शांति'। धन-दौलत से भौतिक संपदा खरीद सकते हैं, किंतु शांति नहीं। यही कारण है दुनिया भर के कई धनी देश 'शांति' को बनाये रखने के लिए युद्ध के लिए तत्पर हो रहे हैं। युद्ध से कभी शांति स्थापित नहीं हो सकती, बल्कि सभी देशों के बीच चर्चा एवं सहयोग के द्वारा शांति की स्थापना की जा सकती है। इसी उद्देश्य से 24 अक्तूबर, 1945 में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई। इसका मूल उद्देश्य है-'विश्व के सभी देशों के बीच शांति की स्थापना करना।' इतना ही नहीं शांति के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए हर वर्ष नोबेल पुरस्कार भी दिया जाता है।

शांति की स्थापना में अपना जीवन समर्पित करने वाले कई महान हस्तियाँ हैं। यहाँ उन्हीं में से दो महान लोगों के महान कार्यों के बारे में दिया जा रहा है जिन्होंने अपना सारा जीवन अहिंसा, शांति, सेवा और भाईचारे की स्थापना में लगा दिया है।

नेल्सन मंडेला

मंडेला के नाम से विश्वभर में प्रख्यात शांतिदूत का पूरा नाम नेल्सन रोलिह्लह्ला मंडेला था। उनका जन्म 18 जुलाई, 1898 को दक्षिण अफ्रीका में हुआ। वे दक्षिण अफ्रिका के प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति थे। राष्ट्रपति बनने से पूर्व वे दक्षिण अफ्रीका में सदियों से चल रहे रंगभेद का विरोध करने वाले अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस और इसके सशस्त्र गुट ''उमखोतों वे सिजवे'' के अध्यक्ष रहे। रंगभेद विरोधी संघर्ष के कारण उन्होंने 27 वर्ष रॉबेन द्वीप के कारागार में बिताया। उन्हें कोयला खनिक का काम करना पड़ा था। सन् 1990 में श्वेत सरकार से हुए एक समझौते के बाद उन्होंने नये दक्षिण अफ्रीका का निर्माण किया। वे दक्षिण अफ्रीका एवं समूचे विश्व में रंगभेद का विरोध करने के प्रतीक बन गये। संयुक्त राष्ट्र संघ ने उनके जन्मदिन को ''नेल्सन मंडेला अंतर्राष्ट्रीय दिवस'' के रूप में मनाने का निर्णय लिया। दक्षिण अफ्रीका के लोग मंडेला को व्यापक रूप से ''राष्ट्रपिता'' मानते हैं। उन्हें लोकतंत्र के प्रथम संस्थापक

और उद्धारकर्ता के रूप में देखा जाता था। दक्षिण अफ्रीका में प्रायः उन्हें ''मदीबा'' कह कर बुलाया जाता है। यह शब्द बुज़ुर्गों के लिए सम्मान सूचक है। उन्हें अब तक 250 से भी अधिक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। सन् 1993 में नोबेल शांति पुरस्कार, भारत रत्न पुरस्कार और सन् 2008 में गाँधी शांति पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उनका स्वर्गवास 23 नवंबर, 2013 को हुआ। ऐसे महान शांतिदूत के निधन पर सारे विश्व ने अपूर्व श्रद्धांजलि समर्पित की। इनका संघर्षमय जीवन हमें शांति की राह में चलने के लिए पथ प्रदर्शित करता है।

मदर तेरेसा

मदर तेरेसा एक ऐसा नाम है, जो शांति, करुणा, प्रेम व वात्सल्य का पर्याय कहलाता है। ऐसी महान माता का पूरा नाम आग्नेस गोंकशे बोजशियु तेरेसा था। उनका जन्म 26 अगस्त, 1910 और स्वर्गवास 5 सितंबर, 1997 में हुआ था। वैसे तो वे युगोस्लाविया मूल की थीं, आगे चलकर सेवा की भावना में रत होकर भारत की नागरिकता स्वीकार ली। प्रारंभ में उन्होंने अध्यापिका के रूप में काम किया। किंतु उनका सपना कुछ और ही था। वे अनाथों, ग़रीबों और रोगियों की सेवा करना चाहती थीं। इसीलिए उन्होंने सन् 1950 में कोलकाता में ''मिशनरीज़ ऑफ चारिटी'' की स्थापना की। उनके द्वारा स्थापित संस्था को ही 'निर्मल हृदय' कहते हैं। उन्होंने अपना सारा जीवन ग़रीब, अनाथ और बीमार लोगों की सेवा में लगा दिया। सन् 1970 तक वे ग़रीबों और असहायों के लिए अपने मानवीय कार्यों के लिए प्रसिद्ध हो गयीं। सन् 1979 में उन्हें नोबेल पुरस्कार, सन् 1980 में भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कथनी से कहीं करनी को अधिक महत्व दिया। इसीलिए वे हमेशा कहा करती थी- ''प्रार्थना करनेवाले होंठों से सहायता करने वाले हाथ कहीं अच्छे हैं।'' मातृमूर्ति, करुणामयी मदर तेरेसा ने अपने जीवन में यह साबित कर दिखाया है कि 'मानव सेवा ही माधव सेवा है।' परोपकार के पथ पर चलने वालों को ही वास्तविक जीवन मिलता है। आज वे हमारे बीच नहीं रहीं, किंतु उनके महान विचार, उत्कृष्ट कार्य और श्रेष्ठ परोपकारी गुण आज भी एक दिव्यज्योति के रूप में हमें वास्तविक जीवन बिताने की राह दिखाते हैं।

प्रश्न :

1. शांति की परिभाषा क्या हो सकती है? अपने शब्दों में बताइए।
2. नेल्सन मंडेला के जीवन से हमें क्या संदेश मिलता है?
3. मदर तेरेसा ने अपने जीवन में क्या सिद्ध कर दिखाया है?
4. ''प्रार्थना करने वाले होठों से कहीं अच्छे सहायता करने वाले हाथ हैं।''- पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।